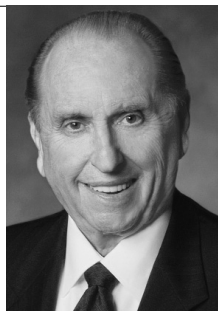

थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

वह यहां नहीं है, परन्तु जी उठा है

आज केवल कफरनहूम के अवशेष ही बचे हैं, झील के किनारे का वह शहर, जो उद्धारकर्ता की गलीली सेवकाई का केन्द्र था । यहां उसने आराधनालयों में उपदेश दिए, समुद्र किनारे सीखाया, और घरों में चंगाई दी ।

अपनी सेवकाई के आरंभ में, यीशु ने यशायाह के एक अध्याय में से पढ़ा थाः ''प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं; कि बंधुओं के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूं'' (यशायाह 61:1; लूका 4:18 भी देखें)—परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों को बचाने की द्विव्य योजना की स्पष्ट घोषणा ।

लेकिन गलील में यीशु का प्रवचन मात्र एक परिचय था । मनुष्य के पुत्र के पास गुलगुता नामक पहाड़ी पर एक भयानक भेंट हमेशा तय थी ।

अन्तिम भोज के बाद गतसमनी के बाग में पकड़वाया गया, शिष्यों द्वारा त्याग दिया गया, थूका गया, मुकदमा चलाया गया, और अपमानित किया गया, यीशु अपनी महान सलीब को लादे लड़खड़ाता हुआ कलवरी की ओर चला था । वह शान से विश्वासघात, यातना, सलीब पर मृत्यु की ओर बढ़ा था ।

''पवित्र शहर'' गीत के शब्दों मेंः

दृश्य बदल गया था । ...
सुबह ठंडी और सर्द थी,
जब सलीब का साया ऊपर उठा
सुनसान पहाड़ी के ऊपर ।[1]

हमारे लिए हमारे स्वर्ग के पिता ने अपना पुत्र दिया । हमारे लिए हमारे बड़े भाई ने अपना जीवन दिया ।

आखिरी क्षण पर स्वामी पीछे हट सकता था । लेकिन उसने ऐसा नहीं किया । उसने वह सब कुछ सहन किया ताकि वह सब कुछ बचा सकेः मनुष्यजाति, पृथ्वी, और वह सम्पूर्ण जीवन जो कभी इस पर था ।

मसीही राष्ट्रों में बोले जाने वाले किसी भी अन्य शब्दों ने मुझे इतना प्रभावित नहीं किया है जितना कि रोती हुई मरियम मगदलनी और अन्य मरियम को स्वर्गदूत द्वारा बोले गए शब्दों ने किया है, जब वे प्रभु के शरीर की देखभाल के लिए कब्र को जा रही थींः ''तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूँढती हो ? वह यहाँ नहीं, परन्तु जी उठा है'' (लूका 24:5–6) ।

इस घोषणा के साथ, वे जो जी चुके और मर गए हैं, और जो अभी जी रहे हैं और एक दिन मर जाएंगे, और जिन्होंने अभी इस जीवन में आना है और फिर मर जाना है, वे सब के सब बचा लिए गए हैं ।

मसीह द्वारा मृत्यु पर विजय पाने के परिणामस्वरूप, हम सब पुनः जीवित होंगे । यही आत्मा की मुक्ति है । पौलुस ने लिखा थाः

''स्वर्गीय देह है, और पार्थिव देह भी हैः परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और हैं, और पार्थिव का और ।

''सूर्य का तेज और है, चान्द का तेज और है, और तारागणों का तेज और है, (क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है) ।

''मुर्दो का जी उठना भी ऐसा ही है । शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है'' (1 कुरिन्थियों 15:40–42) ।

यही वह सिलेस्टियल महिमा है जिसे हम खोजते हैं । यही वह परमेश्वर की उपस्थिति है जिसमें हम रहने की अभिलाषा करते हैं ।

यही वह अनन्त परिवार है जिसकी सदस्यता हम चाहते हैं ।

जिसने हम से प्रत्येक को अन्तहीन मृत्यु से बचा लिया है उसके विषय में, मैं साक्षी देता हूं वह सच्चाई का शिक्षक है—लेकिन वह शिक्षक से बढ़कर है । वह परिपूर्ण जीवन का उदाहरण है—लेकिन वह उदाहरण से बढ़कर है । वह महान चिकित्सक है—लेकिन वह चिकित्सक से बढ़कर है । वह वास्तव में संसार का उद्धारकर्ता है, परमेश्वर का पुत्र, शान्ति का राजकुमार, इस्राएल का पवित्रजन, हमेशा जीविता प्रभु, जिसने घोषणा की थी, ''मैं प्रथम और अन्तिम और जीविता हूं, मैं वह हूं जिसे मारा गया था; मैं पिता के पास तुम्हारा सहायक हूं'' (देखें सि.और अनु. 110:4) ।

''ओह, यह वाक्य कितना मधुर आनन्द देता है: 'मुझे मालूम है कि मेरा मुक्तिदाता जीवित है !' ''[2]

इसकी मैं साक्षी देता हूं ।

विवरण

1. Frederick E. Weatherly, "The Holy City" (1892) ।
2. "I Know That My Redeemer Lives," *स्तुतिगीत सं.* 36 ।

इस सन्देश से शिक्षा

अच्छे शिक्षक जिन्हें सीखाते हैं उन्हें एकता के लिए उत्साहित करते हें । जब लोग अपनी अन्तदृष्टि को बांटते और एक दूसरे को आदर से सुनते हैं, वे न केवल सकारत्मक वातावरण का आनन्द लेते हैं लेकिन अधिक संगठित रहते हैं (देखें *Teaching, No Greater Call* [1999], 63) । उनके मध्य में एकता का विकास होगा जिन्हें आप सीखाते हो जब आप और वे श्रद्धापूर्वक यीशु मसीह के प्रायश्चित और उसके पुनरुत्थान की गवाही देते हैं । यह एकता परिवारों को अध्यक्ष मॉनसन की सलाह ''अनन्त परिवार'' बनने का पालन करने में मदद कर सकती है ।

युवा

उसने हमें घर वापस जाने का मार्ग दिखाया था

''उद्धारकर्ता पृथ्वी पर हमें दिखाने आया था कि कैसे उस योजना का पालन करना है जिसे स्वर्ग में रचा गया था—एक ऐसी योजना, जिसका यदि हम पालन करते हैं, हम आनन्दित होंगे । उसके उदाहरण ने हमें स्वर्गीय पिता के पास वापस घर जाने का मार्ग दिखाया था । अभी तक किसी ने भी ऐसा 'अटल और अचल जीवन' नहीं जीवन जीया है (मुसायाह 5:15) । कभी भी उसका ध्यानभंग नहीं हुआ । उसका ध्यान पिता की इच्छा को पूरा करने पर केन्द्रीत था, और वह अपने दिव्य मिशन के प्रति सच्चा बना रहा । ...

''आप उस अदभुत योजना का हिस्सा हैं जिसे पहले के राज्य में प्रस्तुत किया गया था । जब से इस योजना को स्वीकार किया गया तब से आपका पृथ्वी पर आना पूर्वनियोजित था । आपके आने का समय और स्थान कोई दुर्घटना नहीं है । उस समय का आपका 'अत्याधिक विश्वास और अच्छे कर्म (अलमा 13:3) ने आपकी वर्तमान उपलब्धि की नींव रखी है यदि आप विश्वसनीय और आज्ञाकारी रहते हैं । ... आपके पास करने के लिए महान कार्य है । अपने दिव्य मिशन को प्राप्त करने और सुख की योजना को जीने के लिए, आपको भी अटल और अचल रहना चाहिए ।''

एलेनी एस. डाल्टन, युवतियों की जनरल अध्यक्षा ''At All Times, in All Things, and in All Places,'' *Liahona,* **मई** 2008, 116 ।

© 2011 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपा । अंग्रेजी अनुमतिः 6/10 । अनुवाद अनुमतिः 6/10 । *First Presidency Message,* April 2011 का अनुवाद । Hindi । 09764 294

सहायता संस्था का उद्देश्य

इस सामग्री को पढ़ें, और जैसा उचित हो, बहनें जिन से आप भेंट करती हैं के साथ इस पर चर्चा करें । अपनी बहनों को मजबूत करने के प्रति और सहायता संस्था को अपने जीवन का सक्रिय हिस्सा बनाने में मदद के लिए प्रश्नों का प्रयोग करें ।

विश्वास • परिवार • सहायता

जब हमारी अध्यक्षता को पहली बार नियुक्त किया गया था, हमें सहायता संस्था के इतिहास के बारे में कुछ सामग्रियां दी गई थीं । हमने सहायता संस्था के उद्देश्य और प्रभु हम से क्या करवाना चाहता है जानने के लिए, प्रार्थनापूर्वक उनका अध्ययन किया । हमने सीखा कि सहायता संस्था का उद्देश्य जैसा कि प्रभु ने संगठित किया था, सीखाना, और उसकी पुत्रियों को अनन्त जीवन की आशीषों को पाने के लिए प्रेरित करना है ।

सहायता संस्था के उद्देश्य को पूरा करने के लिए, प्रभु ने प्रत्येक बहन और इस संगठन को सामूहिक रूप से दायित्व दिया है:

1. विश्वास और व्यक्तिगत धार्मिकता में विकास करना ।
2. परिवारों और घरों को मजबूती देना ।
3. प्रभु और उसके बच्चों की सेवा द्वारा सहायता करना ।

हम इस कार्य को प्रभु के तरीके से केवल तभी कर सकते हैं जब हम व्यक्तिगत प्रकटीकरण को खोजते, पाते, और उसके अनुसार कार्य करते हैं । बिना व्यक्तिगत प्रकटीकरण के, हम सफल नहीं हो सकती । यदि हम व्यक्तिगत प्रकटीकरण पर ध्यान देती हैं, हम असफल नहीं हो सकती । भविष्यवक्ता नफी हमें निर्देश देता है कि पवित्र आत्मा हमें 'बताएगा कि [हमें] क्या करना चाहिए'' (2 नफी 32:5) । हमें अपने आपको इतना स्थिर और शान्त करना है कि हम आत्मा की आवाज सुन सकें ।

बहनों, परमेश्वर के राज्य के निर्माण में मदद और प्रभु के आगमन की तैयारी के लिए हमारे पास निभाने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका है । असल में, प्रभु का काम बिना उसकी बेटियों की मदद के पूरा नहीं हो सकता है । इसलिए, प्रभु हम से आशा करता है हम अपने योगदान को बढ़ाएं । वह हम से आशा करता है कि सहायता संस्था का इतना अधिक उद्देश्य पूरा हो जितना पहले कभी नहीं हुआ है ।

जूली बी. बेक, सहायता संस्था जनरल अध्यक्षा ।

धर्मशास्त्रों से

व्यवस्थाविवरण 6:5–7; लूका 10:30–37; याकूब 1:27; 2 नफी 25:26; मुसायाह 3:12–13

हमारे इतिहास से

9 जून 1842 को, सहायता संस्था की सभा में, भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने बहनों को सीखाया था कि उनकी संस्था ''गरीब की न केवल मदद करती है, लेकिन आत्माओं को भी बचाती है ।''[1] यह कथन सहायता संस्था के आत्मिक के साथ-साथ सांसारिक उद्देश्य ने पूरे इतिहास में इसकी अलग पहचान बनायी है । 1906 में अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ (1838–1918) ने सीखाया थाः ''[सहायता संस्था] न केवल गरीब, बीमार, और जरुरतमंद की आवश्यकता का ध्यान रखती है, लेकिन इसके कर्तव्य का एक भाग—एक बड़ा भाग —सिय्योन की मां और बेटियों के आत्मिक कल्याण और उद्धार की देखभाल करना भी है; यह सुनिश्चत करना कि कहीं किसी की उपेक्षा तो नहीं हो रही, ब्लकि सभी की दुर्भाग्य, संकट, शैतान की शक्तियों, और संसार की बुराइयों जो उन्हें भयभीत करती हैं, से रक्षा की जाती है ।''[2] 2001 में, बारह प्रेरितों की परिषद के एल्डर एम. रसल बलार्ड ने दोहराया था, ''इस गिरजाघर में प्रत्येक बहन जिसने प्रभु के साथ अनुबन्ध बनाया है के पास आत्माओं को बचाने, संसार की स्त्रियों का नेतृत्व करने, सिय्योन में घरों को मजबूती देने, और परमेश्वर के राज्य का निमार्ण करने का अधिकार है ।''[3]

विवरण

1. Joseph Smith, *History of the Church,* 5:25 ।
2. *Teachings of Presidents of the Church: Joseph F. Smith* (1998), 185 ।
3. M. Russell Ballard, "Women of Righteousness," *Liahona,* Dec. 2002, 39 ।

मैं क्या कर सकती हूं ?

1. अपनी बहनों की विश्वास और व्यक्तिगत धार्मिकता को बढ़ाने और उनके परिवारों और घरों को मजबूत करने में मदद के लिए मुझे क्या प्रकटीकरण मिला है ? मैं क्या सहायता दे सकती हूं ?

2. अपने विश्वास को मजबूत करने और व्यक्तिगत धार्मिकता बढ़ाने की अपनी स्वयं की वचनबद्धता के लिए मैं कैसे इस संदेश का उपयोग करूंगी ?

अधिक जानकारी के लिए,
www.reliefsociety.lds.org पर जाएं ।

© 2011 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित ।
भारत में छपा । अंग्रेजी अनुमतिः 6/10 । अनुवाद अनुमतिः 6/10 । *Visiting Teaching Message,* April 2011 का अनुवाद । Hindi । 09764 294